

4862 को लगाई गई कोविड-19 वैक्सीन



डोज तथा 33 को सेकेण्ड डोज का वैक्सीन लगाया गया है। इसके साथ ही 4 हेल्थकेयर वर्कर्स को सेकेण्ड डोज का टीका लगाया गया है। वहीं प्रेटलाईन वर्कर्स में 2 को दूसरे डोज का वैक्सीन किया गया है। इसी प्रकार सीनियर सिटिजनस में 60 वर्ष व उससे अधिक आयु वर्ग के 49 लाभार्थियों को फर्स्ट डोज एवं 37 लाभार्थियों को सेकेण्ड डोज का कोविड-19 का वैक्सीन किया गया है। वहीं जिले में 18 से 44 आयुवर्ग के 4193 लाभार्थियों का वैक्सीन किया गया है, जिसमें 4060 को कोविड-19 वैक्सीन का फर्स्ट डोज और 133 को सेकेण्ड डोज भी लगाया गया है।

कटनी। जिले में निर्धारित टीकाकरण केन्द्रों में कोविड-19 का वैक्सीन कार्य किया गया। जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. समीर सिंघई ने बताया कि कटनी जिले में 9 जून को कुल 4862 लाभार्थियों का वैक्सीन किया गया है। 45 वर्ष व उससे अधिक आयु के 544 व्यक्तियों को फर्स्ट

आज 7 केन्द्रों पर हो रहा वैक्सीनेशन

जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. समीर सिंघई ने बताया कि कटनी अर्बन क्षेत्र में पुरानी कचहरी परिसर में टीकाकरण होगा। इसके साथ ही जिला अस्पताल अंतर्गत पुरानी कचहरी परिसर में को-वैक्सीन के दूसरे डोज का भी टीकाकरण किया जा रहा है। आज 10 जून को जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में भी निर्धारित केन्द्रों पर वैक्सीनेशन होगा। जिसमें सीएचसी बड़वारा, सीएचसी बहोरीबंद, सीएससी उमरियापान, पीएचसी कन्हवारा, सीएचसी रीठी, सिविल हॉस्पिटल विजयराघवगढ़ में भी कोविड-19 का वैक्सीनेशन किया जा रहा है। जिले में 9 जून को 18 से 44 आयु वर्ग लोगों के लिये वैक्सीनेशन 18 केन्द्र निर्धारित किये गये हैं। आज पुरानी कचहरी परिसर कटनी, रेलवे स्कूल एनकेजे, सेवा भारती सरस्वती स्कूल दई बस्ती, तिलक कॉलेज, आयुध निर्माण, सिविल अस्पताल विजयराघवगढ़, सीएचसी बड़वारा, सीएचसी बहोरीबंद, सीएचसी उमरियापान, पीएचसी कन्हवारा, पीएचसी पहाड़ी, सीएचसी रीठी, सीएचसी बिलहरी, सिविल हॉस्पिटल विजयराघवगढ़, सीएचसी सिनगौड़ी, सीएचसी कैमोर, पीएचसी स्लीमनाबाद, पीएचसी तेवरी में भी 18 से 44 आयुवर्ग के लिये कोविड-19 वैक्सीनेशन किया जा रहा है। इसके लिये सभी स्टॉट बुक हो चुके हैं। जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. सिंघई ने कहा कि जिन लोगों में 10 जून के लिये अपने स्टॉट ऑनलाईन बुक किये हैं।



आफत की बारिश, जलमग्न बस्ती

कटनी। बारिश पूर्व पानी की निकासीए नालियों की सफाई के कड़े आदेश निर्देश कलेक्टर द्वारा भले ही जारी किए जाते हैं, लेकिन धरातल पर माकूल इंतजाम न होने का खमियाजा जनता को ही झेलना पड़ता है। गुरुवार की सुबह हुई बरसात निचली बस्ती वालों के लिए आफत का सबब साबित हुई। मुहल्ले, बस्ती जलमग्न हो गईं, जिससे नगर परिषद बस्ती की व्यवस्था का पोल खोल रहा यह दृश्य सामने है। जरा सी बारिश होते ही नगर के वाई क्रमांक 13 में रहने

बारिश पूर्व इंतजाम की खुली पोल, नगर परिषद बस्ती की व्यवस्था की खुली कलाई

बस्ती के रहवासी घरों में बरसात का पानी प्रवेश होने से लाचार एवं परेशान नजर आए। इनका पूरा परिवार सुबह से पानी से बचने का जतन करता रहा। बरसात अभी शुरू भी नहीं हुई है कि इसके पहले इंददेव के ट्रेलर से नगर परिषद की व्यवस्था की कलाई खुलती नजर आ रही है। समय रहते नही चेतने तो होने वाली बरसात में नगर की कई बस्तियों को जलमग्न की समस्या से जूझना पड़ेगा।

गाँडवाना सामाजिक उत्थान समिति ने मनाई बिरसा मुंडा जयंती



कटनी। अमर शहीद, उलगुलान, आन्दोलन के जननायक, क्रान्ति के प्रणेता, आदिवासियों के जननायक धरती आबा क्रांतिसूर्य भगवान बिरसा मुंडा के शहादत दिवस पर गाँडवाना सामाजिक उत्थान समिति कटनी ने कोरोना संक्रमण को ध्यान में रखते हुये सीमित संख्या में बिरसा मुंडा बलिदान दिवस गुण्डा प्रेम पूर्वक, आदर्शभाव से अपने समाज के हक अधिकार की बात अंग्रेजी प्रशासन के सामने रखते थे, उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।



जिला कार्यालय में हुआ नवनियुक्त प्रदेश कार्यसमिति सदस्यों का स्वागत

कटनी। भारतीय जनता पार्टी के नवनियुक्त प्रदेश कार्यसमिति सदस्यों का स्वागत भाजपा जिला कार्यालय में किया गया। उपस्थित कार्यकर्ताओं ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को माला पहनाकर उनका अभिनंदन किया। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने जिले को अपनी टीम में उल्लेखनीय तरजीह देकर जिले का गौरव बढ़ाया है। इन नियुक्तियों से निश्चित रूप से संगठन के कार्यों को और अधिक गति मिलेगी। नवनियुक्त सदस्यों ने कहा कि सेवा ही संगठन के सिद्धांत में हम सभी और अधिक ऊर्जा से कार्य करेंगे। नवनियुक्त प्रदेश कार्यसमिति

भाजपा प्रदेश नेतृत्व विष्णुदत्त शर्मा ने बढ़ाया कटनी का मान

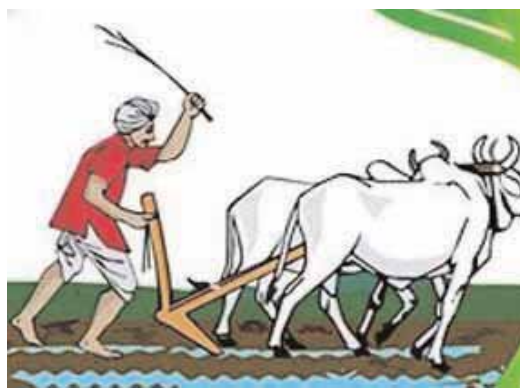
कार्यसमिति सदस्य अपने दायित्व के अनुसार संगठन की नीति रीति को और अधिक विस्तारित करेंगे। संगठन के निरंतर चलते सेवा के कार्यों में गति प्रदान करेंगे। इस अवसर पर हरिशंकर गर्ग, अश्वनी गौतम, अर्पित पोद्दार, चेतन हिंदुजा, भाजयुमो जिलाध्यक्ष मुदुल द्विवेदी, श्रीमती भावना सिंह, जोधराम जयसिंघानी, दीपक तिवारी, रेशु टुड्डा, अमित शर्मा आदि उपस्थित थे।

ग्रीष्मकालीन फसल मूंग एवं उड़द के पंजीयन के लिये 49 केन्द्र स्थापित

कटनी। जिला आपूर्ति अधिकारी पी.के. श्रीवास्तव ने बताया कि जिले में ग्रीष्मकालीन फसल मूंग एवं उड़द के पंजीयन के लिये तहसीलवार 49 पंजीयन केन्द्र स्थापित किये गये हैं। इन केन्द्रों के माध्यम से जिले के कृषक अपना पंजीयन 16 जून तक करा सकेंगे। वर्ष 201-22 के लिये ग्रीष्मकालीन मूंग का समर्थन मूल्य 7196 रुपये प्रति क्विंटल एवं उड़द के लिये 6000 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। इस संबंध में जिले के किसान भाईयों से अपील की गई है कि वे अपनी सुविधा अनुसार किसी भी पंजीयन केन्द्र में अपनी ग्रीष्म कालीन फसल मूंग एवं उड़द का पंजीयन समयवधि में करा लें। पंजीयन के लिये आवश्यक दस्तावेजों में कृषक की समग्र आईडी, आधार कार्ड, बैंक पासबुक (राष्ट्रीयकृत एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंकों के एकल खाते ही मान्य होंगे, जनधन, त्रधा, नाबालिग व बंद एवं अस्थाई रूप से रोके गये खाते पंजीयन में मान्य नहीं होंगे), मोबाइल नंबर, त्रधा पुस्तिका, वनाधिकार पट्टाधारी या सिकमोदार किसानों को वन पट्टे एवं सिकमी अनुबंध की प्रति उपलब्ध करा सकते हैं। कटनी तहसील अंतर्गत निर्धारित पंजीयन

16 जून तक किसान करा सकते हैं अपना पंजीयन

केन्द्रों में सहकारी विपणन संस्था मर्यादित कटनी, प्राथमिक कृषि साख समिति कन्हवारा, प्राथमिक कृषि साख समिति पहाड़ी, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति चाका, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति हीरापुर कौडिया शामिल हैं। इसी प्रकार द्धिमरखेड़ा तहसील अंतर्गत प्राथमिक कृषि साख समिति पानउमरिया, प्राथमिक कृषि साख समिति खमतरा, प्राथमिक कृषि साख समिति ढीमरखेड़ा, प्राथमिक कृषि साख समिति दशरामन, प्राथमिक कृषि साख समिति सिलोड़ी, प्राथमिक कृषि साख समिति झिना पिपरिया, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति देवरीमोला, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति मुरवारी, विपणन सहकारी समिति



उमरियापान में पंजीयन कराया जा सकता है। बड़वारा तहसील के अंतर्गत प्राथमिक कृषि साख समिति बड़वारा, प्राथमिक कृषि साख समिति विलायतकला, प्राथमिक कृषि साख समिति अमाड़ी, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति नन्हवारा (सेझा), बरही तहसील अंतर्गत प्राथमिक कृषि साख समिति बरही, प्राथमिक कृषि साख समिति पिपरिया कला, बहोरीबंद तहसील में प्राथमिक कृषि साख समिति कोड़ीया, प्राथमिक कृषि साख समिति बहोरीबंद, प्राथमिक कृषि साख समिति कुआँ, प्राथमिक कृषि साख समिति कूड़न, प्राथमिक कृषि साख समिति बाकल, प्राथमिक कृषि साख समिति सिहड़ी, प्राथमिक कृषि साख समिति बराही, प्राथमिक कृषि साख सहकारी

समिति इमलिया, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति चौंदनखेडा, प्राथमिक कृषि साख समिति देवरीखरगाँव में पंजीयन केन्द्र निर्धारित किये गये हैं। वहीं रीठी तहसील में प्राथमिक कृषि साख समिति रीठी, प्राथमिक कृषि साख समिति बिलहरी, प्राथमिक कृषि साख समिति बड़गाँव, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति तिलगाँव, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति देवगाँव, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति रैपूरा, और विजयराघवगढ़ तहसील में प्राथमिक कृषि साख समिति उबरा, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति सिंगोड़ी, प्राथमिक कृषि साख समिति विजयराघवगढ़, प्राथमिक कृषि साख समिति देवराकला, प्राथमिक कृषि साख समिति जिंवारा, प्राथमिक कृषि साख समिति नन्हवारा, प्राथमिक कृषि साख समिति कारीतलाई, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति सलेया कोहारी, स्लीमनाबाद तहसील में प्राथमिक कृषि साख समिति तेवरी, प्राथमिक कृषि साख समिति सलीमनाबाद, प्राथमिक कृषि साख समिति पड़भटा, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति धरवारा, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति धूरी में पंजीयन केन्द्र स्थापित किये गये हैं।

कलेक्टर को अधिकार मिलने से दूर होंगी नागरिकता सम्बंधित समस्याएं

सिंधी काउंसिल ऑफ इंडिया महिला शाखा ने जताया केंद्र सरकार का आभार

कटनी। नागरिकता सम्बंधित समस्याओं के तत्काल निदान अब कलेक्टर कर सकेंगे। केंद्र सरकार ने पाकिस्तान सिंध से आये हिन्दू धर्मावलंबियों तथा अभी भी वहाँ की नागरिकता के साथ रह रहे अनेक परिवारों को विभिन्न परेशानियों को उठाना पड़ता है। सम्बंधित किसी भी औपचारिकता अथवा समस्याओं को निपटाने के लिए जिले के कलेक्टर को अधिकार दिए हैं। यह अधिकार प्राप्त होने से स्थानीय स्तर पर ही तमाम समस्या आसानी से निपट सकेंगी। मीडिया प्रभारी उषा पमनानी ने बताया कि काउंसिल की कटनी महिला विंग की अध्यक्ष नीलम जगवानी, सोनिया वत्रा ने सिंधी काउंसिल आफ इंडिया महिला शाखा कटनी की ओर केंद्रीय गृह मंत्रालय को इस निर्णय पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह ऐतिहासिक निर्णय है, जिसका इंतजार आजादी के बाद से ही सैकड़ों परिवार कर रहे थे। विशेष तौर पर सिंध पाकिस्तान से आए हिंदू धर्मावलंबियों की नागरिकता संबंधी समस्या दूर करने के लिए अक्सर विविध दस्तावेज औपचारिकता पूरी करने में कठिनाई होती थी। ऐसी तमाम परेशानी का अब हल होगा। इससे पहले ऐसे परिवारों को राजधानी के चक्कर काटना पड़ते थे। निर्णय पर कटनी महिला विंग ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, विदेश मंत्री एस जयशंकर सिंधी काउंसिल ऑफ इंडिया संस्थापक सुरेश केसवानी, राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनदास लधानी, राष्ट्रीय महासचिव चन्द्र लालचंदानी, सांसद शंकर लालवानी का आभार व्यक्त किया है। इसी के साथ उस मांग का भी समर्थन किया है, जिसमें भारत में प्रमुख नदियों के किनारे सिंधी तीर्थ बनाने की मांग सिंधी सेंट्रल काउंसिल ने गत दिवस रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात के दौरान रखी। काउंसिल की कटनी महिला विंग ने कहा कि भारत में सिंधी तीर्थ बनने से न सिर्फ देश वरन दुनिया में सिंधी संस्कृति को लोग समझ सकेंगे। दुनिया की इस प्राचीन सभ्यता का अनुसरण सम्भव होगा।

एसडीएम ने होटल संचालकों की ली बैठक

वैक्सीनेशन के लिये किया प्रेरित, शासन द्वारा जारी गाइडलाइन की दी जाकारी

कटनी। एसडीएम कटनी बलबीर रमन ने नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत संचालित होटल संचालकों की मीटिंग ली। इस दौरान उन्होंने वैक्सीनेशन के प्रति जनजागरूकता लाने और वैक्सीनेशन से जुड़े भ्रमों को दूर कर टीका लगवाने की अपील की। उन्होंने कहा कि वैक्सीनेशन करवाकर आप स्वयं कोविड से होने वाले गंभीर खतरों से अपनी सुरक्षा कर सकते हैं। वहीं श्री रमन ने होटल संचालकों को अपने अधीनस्थ स्टाफका भी वैक्सीनेशन कराने की बात कही। बैठक में एसडीएम ने गृह विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी गाइड लाईन के संबंध में भी विस्तृत जानकारी दी, साथ ही उनका पालन सुनिश्चित करने की समझाईश भी संचालकों को बैठक में उठाने दी। इस दौरान सीएसपी शशिकांत शुक्ला सहित अन्य संबंधित अधिकारी भी मौजूद रहे। वहीं एसडीएम श्री रमन ने जनपद पंचायत रीठी के ग्राम अमगावां भी पहुंचे। जहां पर उन्होंने 10 जून को ग्राम में आयोजित होने वाले मेगा वैक्सीनेशन केम की तैयारियों को देखे। उन्होंने बताया कि ग्रामीणों के बैठने और सोशल डिस्टेंस के साथ टीका लगवाने की व्यवस्था हो। साथ ही अमगावां सहित आसपास के गांव में भी प्रचार प्रसार कर लोगों को टीका लगवाने प्रेरित करें। बीएमओ ने बताया कि टीकाकरण सुबह 8 बजे से पंचायत भवन शुरू होगा। इस दौरान ग्राम अमगावां में तहसीलदार राजेश पाण्डेय, सीडीओ जनपद प्रदीप सिंह सहित अन्य संबंधित अधिकारी भी उपस्थित रहे।

श्रीराम मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल
आदर्श कॉलोनी, मेन रोड, नई बस्ती, कटनी 483501 (म.प्र.)
फोन : 07622-408444, 409444 मोबा. 8982275111, 8982275222, 8982275333

डॉ. बलदेव सिंह MD (GENERAL MEDICINE) फेमली फिजीशियन
पूर्व चिकित्सक अपोलो हॉस्पिटल हृदय, छाती, गुर्दा एवं मधुमेह रोग विशेषज्ञ

डॉ. गगन सोनी BDS डेंटल सर्जन
कटनी के सुप्रसिद्ध दंत एवं मुखा रोग विशेषज्ञ

डॉ. अनुराग खरे MBBS, DNB
डॉ. कनिष्क अग्रवाल MBBS, DNB
डॉ. जाकिर हुसैन MBBS, DNB
डॉ. अनिमेष गुप्ता MBBS, DNB

उपलब्ध विभाग
• हृदय रोग विभाग
• मस्तिष्क रोग विभाग
• स्त्री एवं प्रसूति विभाग
• दंत रोग विभाग
• हड्डी रोग विभाग
• त्वचा एवं संतत विभाग

उपलब्ध सुविधाएँ
• नार्मल डिलीवरी
• सी.सी. प्रायवेट बार्ड
• सोनोग्राफि क्लिनिक
• लेप्रोस्कोपिक सर्जरी
• जनरल सर्जरी
• आई.सी.यू. बार्ड

सभी प्रकार की सर्जरी एवं मर्त्य की सुविधा उपलब्ध

अनलॉक: संक्रमण पर नियंत्रण के लिए दौड़ रहे कोरोना विनाशक रथ



कटनी। कोरोना कर्फ्यू अनलॉक के दौरान बाजार में बढ़ने वाली भीड़ को दृष्टिगत रखते हुए संक्रमण के प्रसार पर नियंत्रण हेतु निरंतर सोडियम हाइपोक्लोराइट का छिड़काव कराने की कार्यवाही की जाकर स्थलों को विस्फुरित रखने के प्रयास किये जा रहे हैं। सैनेटाइजेशन प्रभारी अभिषेक बघेल ने जानकारी देते हुए बताया कि अभियान के तहत आज निगम के कोरोना विनाशक रथों के माध्यम से रोशन नगर स्थित दुर्गा आटा चक्री के पास, एन.के.जे थाना के पीछे गोलू होटल के पास, तिलक कॉलेज रोड स्थित उपस्वास्थ्य केन्द्र परिसर, दुर्गा चौक खिरनही आंगनबाड़ी केन्द्र परिसर एवं आसपास के स्थलों, राहुन बाग के विभिन्न स्थलों एवं गहोई कॉलोनी की विभिन्न गलियों के रहवासी स्थलों में कोरोना विनाशक रथों के जैटर पंप के माध्यम से सोडियम हाइपोक्लोराइट के घोल का छिड़काव किया जाकर स्थलों को विस्फुरित किया गया। निगमायुक्त सत्येन्द्र सिंह धाकर ने बताया कि नगर की सफाई व्यवस्था के साथ-साथ संक्रमण से प्रसार पर नियंत्रण हेतु जिला प्रशासन के निर्देशन में निगम प्रशासन द्वारा निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। अनलॉक के दौरान बाजार क्षेत्रों में बढ़ने वाली भीड़ एवं संक्रमण से बचाव हेतु आपने नागरिकों से मास्क का उपयोग करने, एवं सामाजिक दूरी का पालन करने एवं अपने घरों के आस पास सफाई बनाये रखने की अपील की है।



बरगद के पेड़ की पूजा कर सुहागन महिलाओं ने की अखंड सौभाग्य की कामना

सौभाग्य के व्रत वट सावित्री की शहर भर में रही धूम

कटनी। वट सावित्री व्रत ज्येष्ठ मास की अमावस्या तिथि को किया जाता है। इस साल वट सावित्री व्रत आज 10 जून दिन गुरुवार को पूरी विधि-विधान से रखा गया। आज सुहागन महिलाओं ने अपने सुहाग के लिए व्रत रखा और पूरे 16 श्रृंगार कर बरगद के पेड़ की पूजा करने पहुंची। ऐसा पति की लंबी आयु की कामना के लिए किया जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन ही सावित्री ने अपने दृढ़ संकल्प और श्रद्धा से यमराज द्वारा अपने मृत पति सत्यवान के प्राण वापस पाए थे। इस दिन पूजा के दौरान वट सावित्री व्रत की कथा का श्रवण किया जाता है। इस दिन विवाहित औरतें वट वृक्ष की पूजा करती हैं। इस पूजा का मुख्य उद्देश्य अपने पति की लंबी उम्र की कामना करना और अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाना होता है। वट सावित्री व्रत सौभाग्य प्राप्ति के लिए एक बड़ा व्रत माना जाता है।



यमराज से पति के प्राण वापस ले आई थी सावित्री

प्रसिद्ध तत्वज्ञानी अश्वपति भद्र देश के राजा थे। उनको संतान सुख नहीं प्राप्त था। इसके लिए उन्होंने 18 वर्ष तक कठोर तपस्या की, जिसके उपरांत सावित्री देवी ने कन्या प्राप्ति का वरदान दिया। इस वजह से जन्म लेने के बाद कन्या का नाम सावित्री रखा गया। कन्या बड़ी होकर बहुत ही रूपवान हुई। योग्य वर न मिलने की वजह से राजा दुखी रहते थे। राजा ने कन्या को खुद वर खोजने के लिए भेजा। जंगल में उसकी मुलाकात सत्यवान से हुई। धूमसेन के पुत्र सत्यवान को पतिरूप में स्वीकार कर लिया। इस घटना की जानकारी के बाद ऋषि नारद जी ने अश्वपति से सत्यवान की अत्यंत आयु के बारे में बताया। माता-पिता ने बहुत समझाया परन्तु सावित्री अपने धर्म से नहीं छिपीं। जिनके जिक्र के आगे राजा को झुकना पड़ा। सावित्री और सत्यवान का विवाह हो गया। सत्यवान बड़े गुणवान, धर्मात्मा और बलवान थे। वे अपने माता-पिता का पूरा ख्याल रखते थे। सावित्री राजमहल छोड़कर जंगल की कुटिया में आ गई थीं, उन्होंने वस्त्राभूषणों का त्यागकर अपने अन्धे सास-ससुर की सेवा करती रहती थीं। सत्यवान की मृत्यु का दिन निकट आ गया। नारद ने सावित्री को पहले ही सत्यवान की मृत्यु के दिन के बारे में बता दिया था। समय नजदीक आने से सावित्री अधीर होने लगीं। उन्होंने तीन दिन पहले से ही उपवास शुरू कर दिया। नारद मुनि के कहने पर पितरों का पूजन किया। प्रत्येक दिन की तरह सत्यवान भोजन बनाने के लिए जंगल में लकड़ियां काटने जाने लगे तो सावित्री उनके साथ गईं। वह सत्यवान के महाप्रयाण का दिन था। सत्यवान लकड़ी काटने पेड़ पर चढ़े लेकिन सिर चकराने की वजह से नीचे उतर आये। सावित्री पति का सिर अपनी गोद में रखकर उन्हें सहलाने लगीं। तभी यमराज आते दिखे जो सत्यवान के प्राण लेकर जाने लगे। सावित्री भी यमराज के पीछे-पीछे जाने लगीं। उन्होंने बहुत मना किया परन्तु सावित्री ने कहा जहां मेरे पतिदेव जाते हैं, वहां मुझे जाना ही चाहिये। बार-बार मना करने के बाद भी सावित्री पीछे-पीछे चलती रहीं। सावित्री की निष्ठ और पतिपरायणता को देखकर यम ने एक-एक करके वरदान में सावित्री के अन्धे सास-ससुर को आंखें दीं, उनका खोया हुआ राज्य दिया और सावित्री को लौटने के लिए कहा। वह लौटती कैसे सावित्री के प्राण तो यमराज लिये जा रहे थे। यमराज ने फिर कहा कि सत्यवान को छोड़कर चाहे जो मांगना चाहे मांग सकती हो, इस पर सावित्री ने 100 संतानों और सौभाग्यवती का वरदान मांगा। यम ने बिना विचारे प्रसन्न होकर तथस्तु बोल दिया। वचनबद्ध यमराज आगे बढ़ने लगे। सावित्री ने कहा कि प्रभु मैं एक पतिव्रता पत्नी हूँ और आपने मुझे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया है। यह सुनकर यमराज को सत्यवान के प्राण छोड़ने पड़े। सावित्री उसी वट वृक्ष के पास आ गईं, जहां उसके पति का मृत शरीर पड़ा था। सत्यवान जीवित हो गए, माता-पिता को दिव्य ज्योति प्राप्त हो गई और उनका राज्य भी वापस मिल गया। इस प्रकार सावित्री-सत्यवान चिरकाल तक राज्य सुख भोगते रहे। अतः पतिव्रता सावित्री की तरह ही अपने सास-ससुर का उचित पूजन करने के साथ ही अन्य विधियों को प्रारंभ करें। वट सावित्री व्रत करने और इस कथा को सुनने से व्रत रखने वाले के वैवाहिक जीवन के सभी संकट टल जाते हैं।



ओवरलोड वाहनों से जर्जर हुआ पुल

कटनी।

तहसिलील क्षेत्र अंतर्गत आने वाले ग्राम सिमरिया से टिरी तक पूर्व में सड़क निर्माण का कार्य प्रधानमंत्री ग्राम सड़क परियोजना के तहत करवाया गया था। सिमरिया और टिरी ग्राम के बीच में ब्रिज का निर्माण भी हुआ था। क्षेत्र में हुई बेमौसम बरसात के बाद ब्रिज के दोनों हिस्सों धसाव होने लगा है। ग्रामीणों ने बताया कि पूर्व में सड़क में बड़े वाहन नहीं निकलते थे, लेकिन खरीदी केन्द्र बनने के बाद यहां हैवी वाहनों का निकलना भी चालू हो गया है। भारी वाहन निकलने और क्षेत्र में अचानक हुई बारिश के बाद पुल के दोनों ओर धसाव चालू हो गया है। कुछ दिनों पूर्व रात में दो पहिया वाहन चालक भी दुर्घटना का शिकार हो गए।

बाइक से शराब की तस्करी करते युवक गिरफ्तार

हरतला मेन रोड में बरही पुलिस की कार्रवाई, 60 लीटर शराब जप्त

कटनी। बरही पुलिस ने हरतला मेनरोड पर दबिश देकर मोटर सायकल से देशी महुआ शराब की तस्करी कर रहे एक 32 वर्षीय युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास से 60 लीटर देशी महुआ शराब बरामद की गई है। आरोपी के विरुद्ध आबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। बरही थाना प्रभारी संदीप अयाची ने बताया कि मुखबिरों द्वारा बताया गया कि ग्राम हरतला मेन रोड के पास एक युवक मोटर सायकल में अंधे रूप से देशी कच्ची महुआ शराब लेकर बरही की तरफ आ रहे है। मुखबिरों की इस सूचना की तस्दीक करने पुलिस ने घेराबंदी की तो ग्राम हदरहटा निवासी 32 वर्षीय राम सिंह पिता हेतराम सिंह गौड़ मोटर सायकल से शराब की तस्करी करते पुलिस के हत्ये चढ़ गया। पुलिस ने राम सिंह के पास से मोटर सायकल क्रमांक एम.पी.21एमएम-0724 में बांध कर रहे गए बोरा के अंदर से चार गुम्भों में भरकर रखी गई 60 लीटर देशी महुआ शराब बरामद की गई। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से मोटर सायकल व शराब बरामद करते हुए उसके विरुद्ध आबकारी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस अधीक्षक मयंक अस्थवी व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संदीप मिश्रा के दिशा निर्देश व विजयराघवगढ़ एसडीओपी शिखा सोनी के मार्गदर्शन में शराब तस्कर रामसिंह गौड़ को गिरफ्तार करने में बरही थाना प्रभारी संदीप अयाची, प्रधान आरक्षक जयराम साकेत, आरक्षक संजय सिंह व अखिलेश गर्ग की भूमिका रही।



कैमोर, विजयराघवगढ़ में अभी भी 6 बजे बंद हो रही दुकानें

कैमोर। कोरोना महामारी के समय प्रशासन द्वारा दुकानें खुलने का समय सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक किया गया था। यह व्यवस्था कटनी जिला मुख्यालय सहित जिले के तीनों नगरीय क्षेत्र कैमोर, विजयराघवगढ़ एवं बरही में भी लागू थी। कोरोना मामलों की संख्या में लगातार गिरावट के बाद कटनी के व्यापारियों के आग्रह पर कटनी में दुकानों का समय बढ़ाकर सुबह 8 से शाम 8 बजे तक कर दिया गया पर कैमोर, विजयराघवगढ़ एवं बरही में दुकानों का समय अभी भी 6 से 8 बजे तक ही है। यहां के व्यापारियों का कहना है कि जब कटनी में दुकानों का समय बढ़ा दिया गया है तो इसका लाभ नगर परिषद क्षेत्र के व्यापारियों को भी मिलना चाहिए।

क्राइसिस मैनेजमेंट की बैठक होगी तब बदलेगा टाइम

व्यापारी प्रशासन से समय 8 से 8 बजे तक किये जाने की मांग भी कर रहे पर प्रशासन उनकी इस मांग पर विचार करने के बजाये समय के बाद या पहले दुकानें खुली पाई जाने पर चलायी कार्रवाई कर रहा। बताया गया कि कैमोर, विजयराघवगढ़ में शाम को 6 बजते ही पुलिस और प्रशासन की संयुक्त टीम गश्त पर निकल पड़ती है, जहां भी दुकानें खुली मिली तत्काल चालान काट जाता है। कल शाम विजयराघवगढ़ के संकट मोचन चौराहा क्षेत्र में 6 बजे के बाद दुकान खुली पाई जाने पर तहसीलदार के नेतृत्व में पहुंची टीम ने दो हजार का चालान काट दिया। व्यापारी परियाद करता रहा पर अधिकारियों ने उसकी एक भी नहीं सुनी। इसी तरह आज गुरुवार की सुबह भी विजयराघवगढ़ में

तहसीलदार की टीम ने घूम-घूम कर पूरी दुकानें बंद करा दीं। यहां उल्लेखनीय है कि विजयराघवगढ़ में पिछले एक पखवाड़े से भी अधिक समय से कोरोना का एक भी केस नहीं मिला। अस्पताल और घरों में भी कोरोना मरीजों की संख्या शून्य है ऐसे में व्यापारियों पर प्रशासन की यह सख्ती गैर जरूरी लगती है। प्रशासन कोरोना गाइड लाइन का पालन करायेमास्क नहीं पहनने अथवा सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं करने पर कार्रवाई करे पर दुकान खुलने पर तो थोड़ा राहत प्रदान करे। विजयराघवगढ़ जैसी स्थिति कैमोर और बरही में भी है। यहां भी शाम को 6 बजते ही सायबर बजाती पुलिस की गाड़ी सड़कों पर उतर जाती है। जहां तक कैमोर की बात है यह एक औद्योगिक नगर है। सुबह से मजदूर और कर्मचारी फैक्ट्रियों में काम करने निकल जाते हैं। दिन भर काम करके वे शाम 5-6 बजे तक ही घर लौट पाते हैं, वे किसी काम से जब तक बाजार पहुंचते हैं पूरी दुकानें बंद हो जाती हैं। यहां दुकानों का समय रात्रि 8 बजे तक किया जाना बेहद जरूरी है पर अधिकारियों की समझ में यह बात नहीं आ रही। व्यापारियों का कहना है कि कोरोना क्राइसिस में उन्होंने प्रशासन के निर्देशों का पालन करते हुए पूरा सहयोग किया है अब जब कैमोर/विजयराघवगढ़ सहित पूरे क्षेत्र में कोरोना संकट समाप्ति की ओर है तब प्रशासन भी व्यापारियों को थोड़ा राहत प्रदान करे।

एस डी एम बुलाये आपदा प्रबंधन ग्रुप की बैठक

तहसील और नगर परिषद क्षेत्रों के लिए विजयराघवगढ़ की एसडीएम प्रिया चन्द्रावत को इसीसेन्ट कमांडर नियुक्त किया गया है। वे चाहे तो क्राइसिस मैनेजमेंट टीम की बैठक बुलाकर इस संबंध में निर्णय ले सकती हैं पर मैडम की मंशा अभी व्यापारियों को राहत प्रदान करने की नहीं दिखती इसीलिए अब तक उन्होंने क्राइसिस मैनेजमेंट की बैठक नहीं बुलाई। व्यापारियों ने एस डी एम का ध्यान इस ओर आकृष्ट करते हुए शीघ्र निर्णय लिए जाने का आग्रह किया है।

चिन्हित स्थलों में हो रहा मंडियों का संचालन



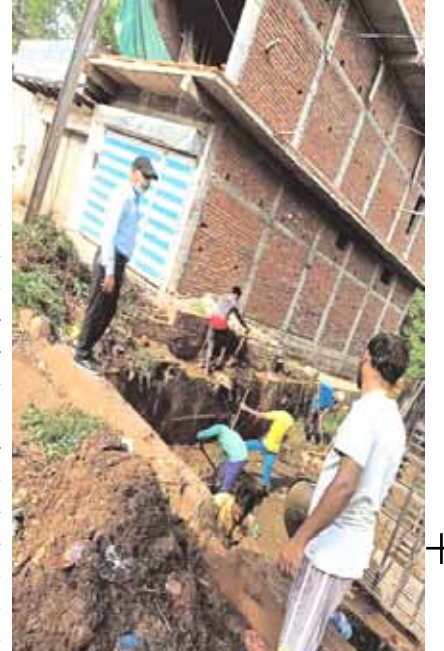
कार्यों की कार्यवाही की गई। निगमायुक्त सत्येन्द्र सिंह धाकरे के निर्देशन एवं नोडल अधिकारी अशाफाक परवेज कुरैशी के निर्देशन में चिन्हित अस्थाई सब्जी मंडी स्थलों में प्रातः निर्धारित समय से अस्थाई मंडी परिसरों की आवश्यक व्यवस्थाओं को पूर्ण कराया जाकर उपस्थित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा प्रोटोकाल के साथ स्थल पर व्यवसायिक गतिविधियों के संचालन की कार्यवाही की गई।



बस्ती शमशाण के पास वाले सुलभ शौचालय, पन्ना मोड से साईं मंदिर तक मुख्य मार्ग के डिवाइडर की सफाई सहित नगर के अन्य स्थलों की सार्वजनिक सड़कों की सफाई व डोर टू डोर कचरे के संग्रहण का कार्य कराया जाकर नगर को साफ एवं संक्रमण मुक्त रखने के प्रयास किये गए। वर्षा पूर्व नाले-नालियों की सफाई हेतु रोजाना चलाये जा रहे अभियान के तहत रघुनाथ गंज वार्ड स्थित ठाकुर साहब के घर से मोहन मेडिकल तक के बड़े नाले, कावस जी वार्ड स्थित बारडोली कॉलेज के पीछे तथा सिद्धबाबा रोड मुखिया वंशकार के सामने वाले नाले, माधवनागर मुख्य मार्ग स्थित सेवन इलेवन के सामने स्थित बड़े नाले की सफाई का कार्य स्वच्छता गैंग के माध्यम से कराया गया।

विभिन्न स्थलों में चला सफाई अभियान

कटनी। वर्षाकाल में नगर की सार्वजनिक सड़कों में जलप्लावन की समस्या उत्पन्न न हो इस हेतु निगम प्रशासन द्वारा स्वच्छता दूतों की दलेल लगाई जाकर नगर के विभिन्न स्थलों के बड़े एवं छोटे नाले-नालियों की सफाई का अभियान चलाया जा रहा है। कोरोना संक्रमण के प्रसार पर नियंत्रण हेतु कोरोना कर्फ्यू अनलॉक में नगर में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाकर नगर के विभिन्न व्यवसायिक स्थलों, बाजार क्षेत्रों, मुख्य मार्गों की सफाई का कार्य दो पालियों में कराया जाकर सोडियम हाइपोक्लोराईड का छिड़काव कर नगर को स्वच्छ एवं संक्रमण मुक्त रखने के प्रयास निरंतर जारी है। प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि निगमायुक्त सत्येन्द्र सिंह धाकरे के निर्देशन में रोजाना चलाये जा रहे सफाई अभियान के तहत विगत रात्रि नगरीय एवं उपनगरीय क्षेत्रों के विभिन्न मार्गों की सफाई कराई जाकर कचरे के उद्यव का कार्य किया गया। प्रातःकालीन सफाई व्यवस्था के माध्यम से नगर के चिन्हित विभिन्न सब्जी मंडी स्थलों सहित गल्ला मंडी पहुंच मार्ग, बस स्टैण्ड के विभिन्न क्षेत्रों, मिशन चौक, घंटाघर के आसपास, कावस जी वार्ड भट्टा मोहाला, भीमराव चौक, विवेकानंद चौक, कावस जी वार्ड भट्टा मोहाला स्थित मलिन



किराये से देना है

सिंगल रूम अटैच- 3000 प्रतिव्यक्ति
सर्विस वालों एवं ऑफिस के लिए- 5000 दो व्यक्ति
पता- बीजेपी कार्यालय के सामने
जबलपुर रोड बरगवां कटनी (म.प्र.)
मो. 8109417340

यदि आप तक समय पर

यशभारत

नहीं पहुंच रहा है तो संपर्क करें फोन- 230033

एम.जी.एम. स्कूल/कॉलेज ऑफ नर्सिंग

Ph. : 07622 - 405074, Mob. 7771001902

Email : mgmnursingkte@gmail.com | Website : mgmnursingcollege.com

जिले के सर्वप्रथम पोस्ट वेसिक BSc. नर्सिंग कॉलेज में प्रवेश प्रारंभ

विशेषताएं

डिप्लोमा जी.एन.एम. नर्सिंग उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को पोस्ट वेसिक BSc. डिग्री नर्सिंग कोर्स करने का सुनहरा अवसर दो वर्षों में BSc. नर्सिंग करें।

क. पाठ्यक्रम अवधि शैक्षणिक अर्हता

1 बी.एस.सी. (नर्सिंग) 4 वर्ष 12 वीं (बायोसंजी)

2 जी.एन.एम. (नर्सिंग) 3 वर्ष 12 वीं

3 पोस्ट वेसिक बी.एस.सी. (नर्सिंग) 2 वर्ष GNM उत्तीर्ण

छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति शासन द्वारा नियमानुसार प्रदान की जाती है

SC / ST / OBC

छात्रावास एवं भोजन (भोजन) की सुविधा

जिला अस्पताल कटनी, मनोरोज चिकित्सालय इंदौर में प्रशिक्षण

मानवता प्राण - इष्टिष्ठ नर्सिंग काउंसिल नई दिल्ली, म.प्र. चिकित्सा शिक्षा विभाग भोपाल, म.प्र. स्टेड नर्सिंग काउंसिल भोपाल, म.प्र. मेडिकल यूनिवर्सिटी जबलपुर



लखनऊ के शक्ति इंजीनियरिंग छात्रों ने कटनी के एटीएम में भी लगाई है सेंध !

जबलपुर पुलिस की जांच में खुलासा, पूछताछ करने कटनी पुलिस की टीम रवाना

कटनी। जबलपुर पुलिस की गिरफ्त में आए एनसीआर कम्पनी के एटीएम में छेड़छाड़ कर पैसे निकालने के तीन आरोपियों ने पहले कटनी तथा बाद में जबलपुर में वारदातों को अंजाम दिया था। जबलपुर पुलिस की पूछताछ में इस बात का खुलासा होने के बाद कटनी पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी के दिशा निर्देश व मार्गदर्शन में कटनी पुलिस की एक टीम भी आरोपियों से पूछताछ करने जबलपुर रवाना हो गई है। पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी के मुताबिक प्रारंभिक पूछताछ के बाद जल्द पड़ने पर आरोपियों को रिमांड पर लेकर भी पूछताछ की जाएगी।

गौरतलब है कि जबलपुर पुलिस ने बीते दिनों नसीआर कम्पनी के एटीएम में छेड़छाड़ कर पैसे निकालने के तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया था। आरोपी लखनऊ की इंटीग्रेल यूनिवर्सिटी में बीटेके के छात्र हैं। पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने मध्य प्रदेश समेत दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, बिहार, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल समेत अन्य राज्यों में इस तरह की वारदातों को अंजाम देना स्वीकार किया है। आरोपियों के नाम उत्तर प्रदेश के कानपुर स्थित ग्राम सरसी निवासी विजय यादव, सर्वोदय नगर कानपुर निवासी गगन कटियार और डॉक्टर्स कॉलोनी वाराणसी निवासी अजीत सिंह बताए गए हैं। यह जानकारी



आरोपियों ने प्रदेश सहित अन्य राज्यों में निकाले थे लाखों रुपए

बुधवार को पुलिस कंट्रोल रूम में आयोजित पत्रकारवार्ता में एसपी सिद्धार्थ बहुगुणा ने दी थी। उन्होंने बताया कि आरोपियों ने संजीवनी नगर थाना क्षेत्र में दो वारदातें कीं। उनके पास से कार क्रमांक यू.पी.32एफएस-4275, 65 हजार रुपए के एटीएम और डॉक्टर्स कॉलोनी वाराणसी निवासी अजीत सिंह बताए गए हैं। यह जानकारी

पैसे निकाल रहे थे। यह पहली बार है जब पुलिस ने उन्हें दबोचा। पुलिस ने अन्य प्रदेशों को भी यह जानकारी भेज दी है। साथ ही कटनी पुलिस को भी इस संबंध में सूचित किया है। जिसके बाद कटनी पुलिस की एक टीम आरोपियों से पूछताछ करने जबलपुर रवाना हो गई है।

इन वारदातों के बाद पकड़ में आया शक्ति गिरोह

एक जून को सुबह लगभग सवा सात बजे विजय यादव गुलौआ चौक स्थित एनबीआई के एटीएम में पहुंचा। उसने पंचकस से कैश बॉक्स खोलकर 77 हजार रुपए निकाल लिए। उसने गढ़ा बाजार स्थित एटीएम में छेड़छाड़ कर दस हजार रुपए निकाले थे।

पहले कटनी, फिर जबलपुर में वारदात

एसपी बहुगुणा के अनुसार आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि वे यूनिवर्सिटी के छात्रावास में रहे हैं। पैसे की कमी के कारण उन्होंने यह अपराध शुरू किया। वे 30 मई को लखनऊ से गगन की कार से बनारस होते हुए रीवा और फिर कटनी पहुंचे। रास्ते में उन्हें कहीं भी एनसीआर कम्पनी का एटीएम नहीं मिला। 31 मई की रात कटनी में उन्हें एनसीआर कम्पनी के दो एटीएम मिले। आरोपी अजीत ने राजकुमार के एटीएम कार्ड, पंचकस और चिमटी के जरिए 20 हजार रुपए निकाले। उसने दूसरे एटीएम से अजीत की पत्नी वैभवती सिंह के कार्ड से पैसे निकाले।

सीजन की खरीदारी के लिए 15 दिन बचे, लेफ्ट-राइट सिस्टम से व्यापारी परेशान, उठाना पड़ रहा आर्थिक नुकसान
व्यापारियों ने कहा : कई जिलों में हर रोज खुल रही दुकानें तो फिर कटनी जिले में क्यों नहीं लिया जा रहा निर्णय



संक्रमण में कमी तो हर दिन खुले पूरा बाजार

कटनी। प्रदेश की राजधानी भोपाल सहित कई जिलों में लॉकडाउन पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है। इन जिलों में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या में कमी आने के बाद अनलॉक को पूरी तरह से लागू करते हुए हर दिन पूरे समय बाजार खोलने के निर्देश जारी किए गए हैं, वहीं दूसरी तरफ कटनी जिले में पिछले एक सप्ताह से संक्रमण की दर 0.25 प्रतिशत से भी नीचे आ गई है और 10 में 3 दिन जीरो पॉजीटिव केस मिले हैं, इसके बावजूद यहां शहरी क्षेत्र में ऑड इवन सिस्टम के तहत सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक दुकानें खोलने का नियम लागू है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में तो सुबह 10 बजे से सायं 6 बजे तक ही दुकानें खुल रही हैं। इन सब स्थितियों के बीच शहर के व्यापारियों ने जिला प्रशासन और जनप्रतिनिधियों से अनलॉक के दौरान ऑड इवन सिस्टम पर पुनर्विचार करने एवं इसे समाप्त किए जाने की मांग की है। विदित हो कि कोरोना संक्रमण में कमी आने के बाद राज्य सरकार की गाइडलाइन का पालन करते हुए कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने जिला आपदा प्रबंधन समिति की बैठक में हुए निर्णय के तहत विगत 1 जून से कटनी जिले में अनलॉक की गाइडलाइन जारी की थी। अनलॉक के तहत पहले सुबह 10 बजे से सायं 6 बजे तक लेफ्ट राइट सिस्टम लागू किया गया था, इसके बाद इस निर्णय में संशोधन करते हुए दुकानें खोलने का समय सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक कर दिया गया था।



खरीदारी के लिए लोग हो रहे परेशान

थोक कपड़ा व्यवसायी मुस्ली गौदानी ने कहा कि भोपाल, रीवा, सतना सहित कई जिलों में अब रोज दुकानें खुल रही हैं। समय भी पहले की तरह तय किया गया है लेकिन कटनी में ऐसा नहीं हो रहा है। कटनी जिला प्रदेश के उन जिलों में शामिल है, जहां संक्रमण पर पूरी तरह से काबू पा लिया गया है। इसके बावजूद जिला प्रशासन अब तक अनलॉक को पूरी तरह से लागू करने पर विचार नहीं किया जा रहा है। व्यवसायी मुस्ली बजाज ने कहा कि अब शादी सहित अन्य मांगलिक कार्यों के सीजन के लिए कुछ ही दिन बाकी रह गए हैं। खरीदारी के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग शहर आ रहे हैं लेकिन लेफ्ट राइट सिस्टम होने की वजह से उन्हें परेशानी हो रही है। प्रशासन को अपने निर्णय में पुनर्विचार करना चाहिए।

व्यापारियों की परेशानियों को समझें प्रशासन

मेन रोड व्यापारी संघ के अध्यक्ष संजय गुप्ता ने कहा कि व्यापारियों की परेशानियों को समझते हुए आपदा प्रबंधन समिति की बैठक आयोजित करते हुए अनलॉक को पूरी तरह से लागू करने का निर्णय लिया जाना चाहिए। कपड़ा व्यापारी मगन जैन ने कहा कि लॉकडाउन के समय शहर के सभी व्यापारियों ने संक्रमण की रोकथाम के लिए प्रशासन का हर संभव सहयोग किया है, अब जबकि सीजन में व्यापार के लिए कुछ ही दिन बाकी रह गए हैं, तब जनप्रतिनिधियों के साथ ही प्रशासन को व्यापारियों के हित में निर्णय लेना चाहिए।

होटल सुकून में सुकून से रुके थे आरोपी

एसपी ने बताया कि आरोपी 31 मई की सुबह जबलपुर पहुंचे। यहां वे तिलवारा स्थित होटल सुकून में रुके। एक जून की सुबह तीनों कार से एनसीआर कम्पनी के एटीएम की तलाश में निकले। संजीवनी नगर में उन्हें दो एटीएम मिले जिसे उन्होंने पैसे निकाले।

एक आरोपी के खाते से हुआ 46 लाख रुपए का ट्रान्जेक्शन

पुलिस टीम ने आरोपी विजय के बैंक खाते की जानकारी जुटाई तो पता चला कि उसके नाम पर तीन खाते हैं। वर्ष 2018 से अब तक एक खाते में 33 लाख, दूसरे में 12 लाख और तीसरे खाते में 96 हजार रुपए (कुल 45 लाख 96 हजार रुपए) का ट्रान्जेक्शन हो चुका है। गिरफ्तारी से बचने के लिए वे कभी दोस्तों, कभी रिश्तेदारों और मजदूरों का एटीएम कार्ड 500 से एक हजार रुपए में किराए पर लेते थे।



दूसरी किशत के लिए महीनों से काट रहे थे चक्कर

कच्चे मकान तुड़वाकर शुरू किया था मकान का निर्माण पीएम आवास की राशि के अभाव में परेशान थे 45 हितग्राही

कटनी। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत दूसरी किशत पाने के लिए पिछले कई महीने से परेशान हितग्राहियों को जल्द दूसरी किशत की राशि जारी की जा रही है। हितग्राहियों की परेशानियों को लेकर विगत 2 जून को यशभारत में खबर प्रकाशित होने के बाद जनपद पंचायत रिटी के जिम्मेदार गहरी निद्रा से जागे और

यशभारत
खबर का असर

हिताग्रहियों को दूसरी किशत की राशि जारी करने के लिए डीएससी तैयार की है। बताया जाता है कि जनपद पंचायत से अगले दो-तीन में हितग्राहियों के बैंक खाते में किशत जमा कर दी जाएगी। दूसरी किशत की राशि मिलने के बाद हितग्राहियों का खुद आशियाने का सपना सच हो जाएगा। गौरतलब है कि जनपद पंचायत रिटी के अंतर्गत कई ग्राम के हितग्राही प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत की दूसरी किशत की राशि पाने के लिए ग्राम पंचायतों के महीनों से चक्कर लगाकर परेशान हो रहे थे। ऐसे करीब 45 से ज्यादा हितग्राही थे, जिन्होंने पीएम आवास योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन जमा किया था और उन्हें पहली किशत भी जारी कर दी गई थी। पहली किशत मिलने के बाद अधिकांश हितग्राहियों ने अपना कच्चा मकान तुड़वाकर नए मकान का सपना देखा था और पहली किशत आने के बाद प्लेंथ लेबल का कार्य पूर्ण भी कर लिया था। लेकिन दूसरी किशत नहीं मिलने की वजह से मकान का निर्माण अधर में लटक गया था। हितग्राही पंचायत के चक्कर काट-काट कर परेशान हो रहे थे। ग्राम पंचायत के कर्ताधर्ताओं द्वारा जिओटेग व दूसरी किशत जारी करने के लिए एपीओ भी काट जा चुके थे। लेकिन इसके बावजूद दूसरी किशत जारी नहीं की जा रही थी। हितग्राहियों द्वारा अपनी समस्या से यशभारत को अवगत कराया गया था। जिस पर 2 जून को इस खबर को प्रकाशित किया गया। खबर प्रकाशित होने के बाद जनपद पंचायत के अधिकारियों द्वारा दूसरी किशत की राशि जारी करने की प्रक्रिया शुरू की गई।

इनका कहना है

पीएम आवास योजना के समन्वयक श्री पांडे ने बताया कि सभी 45 हितग्राहियों को पीएम आवास योजना की दूसरी किशत की राशि जारी करने के लिए डीएससी तैयार की गई है। डीएससी जारी हो जाने के बाद अगले 2-3 दिन के अंदर जनपद से सभी 45 हितग्राहियों के खाते में दूसरी किशत जारी कर दी जाएगी।

यशभारत की खबर के बाद जागे अधिकारी, डीएससी तैयार, 2-3 दिन में जारी होगी किशत

कटनी। जिले में अवैध शराब के संग्रहण, परिवहन, नेतृत्व में आबकारी वृत्त बड़वारा द्वारा ग्राम सलैया, विक्रय एवं निर्माण की रोकथाम के लिये आबकारी बरेला, बड़गांव धनवाही, सुतरी नदी के किनारे, ग्राम विभाग द्वारा विशेष अभियान गढ़ोआ नाले में, ग्राम पिपरिया कला संचालित किया जा रहा है। जिला आबकारी अधिकारी अनिल जैन ने बताया कि आबकारी विभाग द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कार्यवाही की गई है। आबकारी वृत्त बड़वारा और बहोरीबंद में की गई कार्यवाही के दौरान 3515 किलोग्राम महुआ जस कर 8 न्यायालयीन प्रकरण मप्र आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34-1 क एवं च के तहत पंजीबद्ध किये गये। लहान तथा मदिरा की अनुमानित राशि लगभग 42 हजार 250 रुपये आंकी गई है।

दूसरी लहर कमजोर पड़ी : 10 दिनों में 13 केस

आज मिला एक पॉजीटिव केस, एक मरीज को किया गया डिस्चार्ज

कटनी। कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर अब पूरी तरह से कमजोर पड़ गई है। संक्रमण अब पूरी तरह से काबू में है। अप्रैल-मई की तुलना में जून में संक्रमित मरीजों की संख्या में कमी देखने को मिल रही है। पिछले 10 दिनों में जिले में 13 मरीज संक्रमित मिले हैं। इसमें से तीन दिन जीरो पॉजीटिव केस मिले थे। सीएमएचओ जारी किए गए हेल्थ बुलेटिन के मुताबिक जिले में आज एक पॉजीटिव केस मिला है। जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. समीर सिंघई ने बताया कि बीते 24 घंटे में सुप्राटेक की इंदौर लैब से मिली (आरटीपीसीआर)

603 सेम्पल की रिपोर्ट में एक भी पॉजीटिव केस नहीं मिला है, जबकि रिपेट एंटीजन टेस्ट की 611 सेम्पल की रिपोर्ट में एक पॉजीटिव केस मिला है। पिछले 24 घंटे में एक मरीज को डिस्चार्ज किया गया है। अब तक कुल संक्रमित मरीजों 9358 में से 9234 मरीज स्वस्थ हो चुके हैं। जिले में अब 15 एक्टिव केस हैं, जिसमें से 6 जिला चिकित्सालय एवं 9 मरीज होम आईसोलेशन में हैं। जिले में अब तक 140855 लोगों की जांच की जा चुकी है। जिसमें से 124978 लोगों की रिपोर्ट नैगेटिव आई है।



कटनी। जिले में अवैध शराब के संग्रहण, परिवहन, नेतृत्व में आबकारी वृत्त बड़वारा द्वारा ग्राम सलैया, विक्रय एवं निर्माण की रोकथाम के लिये आबकारी बरेला, बड़गांव धनवाही, सुतरी नदी के किनारे, ग्राम विभाग द्वारा विशेष अभियान गढ़ोआ नाले में, ग्राम पिपरिया कला संचालित किया जा रहा है। जिला आबकारी अधिकारी अनिल जैन ने बताया कि आबकारी विभाग द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कार्यवाही की गई है। आबकारी वृत्त बड़वारा और बहोरीबंद में की गई कार्यवाही के दौरान 3515 किलोग्राम महुआ जस कर 8 न्यायालयीन प्रकरण मप्र आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34-1 क एवं च के तहत पंजीबद्ध किये गये। लहान तथा मदिरा की अनुमानित राशि लगभग 42 हजार 250 रुपये आंकी गई है।

13 जून से पटरियों पर दौड़ेगी पुरी बीकानेर साप्ताहिक एक्सप्रेस

कटनी। कोरोना संक्रमण में कमी आने के बाद अब रेलवे द्वारा लंबी दूरी की ट्रेनों का परिचालन बहाल किया जाने लगा है। पिछले दिनों चित्रकूट एक्सप्रेस और इटारसी प्रयागराज एक्सप्रेस को चलाए जाने की घोषणा के बाद अब बीकानेर से कटनी मुड़वारा होकर पुरी तक जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन के संचालन का निर्णय लिया गया है। उत्तर मध्य रेल मुख्यालय द्वारा ट्रेन के परिचालन के साथ ही समय सारिणी भी जारी की गई है। जानकारी के मुताबिक गाड़ी संख्या 04709 बीकानेर पुरी साप्ताहिक एक्सप्रेस 13 जून से पटरियों पर दौड़ेगी। यह गाड़ी प्रत्येक सोमवार को अपराह्न 3 बजकर 40 मिनट पर कटनी मुड़वारा आएगी और 3 बजकर 50 मिनट पर आगे के लिए रवाना होगी। इसी तरह गाड़ी संख्या 04710 पुरी बीकानेर साप्ताहिक एक्सप्रेस आगामी 16 जून से प्रत्येक बुधवार को रात्रि 11 बजकर 20 मिनट पर कटनी मुड़वारा आएगी और 11 बजकर 30 मिनट पर आगे के लिए रवाना होगी। इस गाड़ी के संचालन से यात्रियों को कटनी से शहडोल होते हुए पुरी और रमोह सागर होते हुए बीकानेर की सुविधा मिलेगी।

तालाब के किनारे खेत की मेड़ के नीचे छिपाकर रखी गई थी शराब



करहिया एवं रेपुराहार में भी दबिश

इसी प्रकार सहायक जिला आबकारी अधिकारी जी पी केवट के नेतृत्व में आबकारी वृत्त बहोरीबंद द्वारा करहिया, रेपुराहार के तालाबों के किनारे झाड़ियों में खेत की मेड़ों पर पेड़ों के नीचे, कैमरीहार वन विभाग के जंगल तथा ललितपुर, बूढ़ा ग्राम में आबकारी उडनदस्ता ए टीम द्वारा 2745 किलोग्राम महुआ तथा 70 लीटर अवैध हाथभट्टी मदिरा जप्त कर 7 न्यायालयीन प्रकरण मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34 (1) क एवं च के पंजीबद्ध किये गये। जप्त किये गये लहान तथा मदिरा की अनुमानित राशि लगभग 1 लाख 47 हजार 750 रुपये है। इस दौरान मौके पर महुआ लाहन का सैंपल लिया जाकर नष्ट किया गया।

City Mall

बस स्टैंड से 500 मीटर मैहर रोड पर चौरसिया मैरिज गार्डन के ठीक सामने पर उपलब्ध है।

संपर्क करें- 9424849034, 7052191771, 9425155542

City Mall, Near Main Station, KATNI Ph. : 07622-422408